प्रथम अध्याय

सुरेंद्र वर्मा का साहित्यिक परिचय

''प्रथम अध्याय''
: ''सुरेंद्र वर्मा का साहित्यिक परिचय'' :

: विषय-प्रवेश :

वस्तुत: साहित्यकार को बचपन से ही किताबों से प्यार होता है । किताबें पढते-पढते कब उसकी प्रतिभा जागती है और कब वह लिखने लगता है इसकी तारीख तथा वक्त शायद ही कोई लेखक या साहित्यकार लिखकर रखता होगा । जो साहित्यकार या लेखक लिखकर रखते हैं कि अमुख तारीख से उन्होंने लिखना शुरू किया वे लेखक कितने प्रतिशत सही लेखक हैं यह एक शोध का विषय होगा । तात्पर्य यह है कि कोई भी लेखक साहित्य कृति का विषय जब तक उसके मन में पूरी तरह नहीं उतरता, उस विषय को शब्दरूप देने के लिए लेखक के मन की भावना लेखक को मजबूर नहीं करती तब तक वह साहित्य कृति बेजोड रूप धारण नहीं करती ।

साहित्यकार का मुख्य दायित्व होता है कि वह युग का पथ-प्रदर्शन करें और उसी तरह के साहित्य का निर्माण करें । ऐसे साहित्यकार जो रचनाएँ लिखते हैं वे मील का पत्थर होती हैं । साहित्यकार 'सुरेंद्र वर्मा' इसमें प्रमुख के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं ।

1.1 ''सृजनात्मक साहित्यकार : सुरेंद्र वर्मा''

सुरेंद्र वर्मा एक उच्च कोटि के बहुमुखी एवं प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में और खासकर साठोत्तरी हिंदी नाटककारों में उनका एक विशिष्ट स्थान है । उनकी प्रयोगधर्मिता उनके साहित्य में यत्र-तत्र दिखायी पडती है । एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में उनकी ख्याति है । उन्होंने अपने साहित्य संसार में नाटक के अतिरिक्त एकांकी, उपन्यास, कहानी संग्रह, रूपांतर तथा व्यंग्यविषयक का भी सृजन किया है । काव्यक्षेत्र में एक कवि के रूप में भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । सुरेंद्र वर्मा का व्यक्तित्व बहुमुखी है । वे उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, व्यंग्यकार, कवि और एक अच्छे - खासे समीक्षक भी हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावी ढंग से पानी देने का प्रयास किया है । समाज में व्याप्त बुराइयाँ, प्राचीन परंपरा, प्रथा एवं रूढियाँ, साहित्यकारों की स्वातंत्र्यता का पतन, समाज में फैली अश्लीलता, नैतिकता का अध:पतन तथा भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए उपेक्षित मध्यमवर्ग का चित्रण उनके साहित्य सामाजिक जीवन का दर्पण बनकर हमारे सामने दृष्टिरूप होता है ।

1.2 महानगर की महँगी जिंदगी जीनेवाला रचनाकार -

सुरेंद्र वर्मा के व्यक्तिगत जीवन को लेकर कहीं कोई स्वतंत्र रूप से ग्रंथ उपलब्ध नहीं है । आज वे मुंबई महानगर में बसे हुए हैं । महानगर की जिंदगी उनके जीवन का अभिन्न अंग है । मुंबई की महँगी जिंदगी अनेक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए आप जी रहें है । आज-कल लेखन ही उनकी जीविका का प्रमुख साधन है । प्रकारों के अच्छे-बुरे अनुभवों से वे न केवल परिचित बल्कि प्रभावित भी रहे हैं । कभी समय पर पारश्रमिक न मिलना प्रकाशकों के प्रति उनका आक्रोशबढ़ाने वाला सिद्ध हुआ है । बहुत बार उनका आक्रोश अनुसंधाताओं के सामने भी उन्होंने स्पष्ट किया है ।

महानगर की जिंदगी में वक्त की पाबंदी अनिवार्य बात है । सुरेंद्र वर्मा भी इसके लिए अपवाद नहीं हैं । यदि समय-समयपर, बिना समय तय किए कोई उनसे मिलने जाता है तो उसे उनकी नोंक-झोंक का सामना अवश्य करना पड़ता है । यही नहीं दूर भाष पर भी असमय पर उनसे संपर्क स्थापित करनेवालों को भी ध्वनिमुद्रित संवादों की फटकार सुननी पड़ती है । यह एक संवेदनशील लेखक के व्यक्तिगत व्यवहार के अविस्मरणीय अनुभव हैं । इस तरह से अपने लेखन और महानगर की महँगी जिंदगी से जूझनेवाला यह साहित्यिक अनुसंधाताओं के लिए अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर स्वतंत्र रूप से शोध का विषय बन जाता है ।

1.3 जन्म एवं शिक्षा :-

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखनेवाले नाटककार एवं कथाकार 'सुरेंद्र वर्मा' का जन्म 7 सितंबर 1940 में हुआ । उन्होंने भाषाविज्ञान में एम. ए. किया है । प्राचीन तथा मध्यमकालीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, रंगमंच तथा अंतर्राष्ट्रीय चित्रपट में आप को गहरी रूचि है

1.4 सुरेंद्र वर्मा : 'साहित्यिक परिचय' :

सुरेंद्र वर्मा एक बहुमुखी एवं प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं । एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में उनकी ख्याति है । साहित्य की प्रत्येक विधा से उनकी सृजनता का परिचय हमें प्राप्त होता है । उन्होंने अपने साहित्य संसार में नाटक, उपन्यास, कहानी-संग्रह, रुपांतर, व्यंग्यविषयक लेखन, एकांकी तथा एक कवि के रूप में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है । इसके साथ साथ वे एक अच्छे - खासे समीक्षक भी है । सुरेंद्र वर्मा संपूर्ण रूप में साहित्यकार हैं।परिश्रम सुरेंद्र वर्मा की सफलता का रहस्य है । उन्होंने साहित्य-सृजन को अपना धर्म माना है और उसके प्रति वे पूर्ण एकनिष्ठ भाव से रहे हैं। उनके साहित्य निर्माण के पीछे व्यक्ति और समाज का यथार्थ चित्रण स्पष्ट दिखायी देता है । अपने प्रत्येक कृति को सक्षम बनाने में वे माहिर हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने सन 1960 से लेकर आज तक की साहित्य यात्रा में नऊ नाटक, चार उपन्यास, छः एकांकी, दो कहानी - संग्रह, एक व्यंग्य, दो समीक्षात्मक लेख, एक काव्य संग्रह और इनके साथ-साथ कई फूटकल कहानियाँ लिखी हैं जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित होती जा इस प्रकार की साहित्य लेखन के द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है । अपनी साहित्य सेवा से उन्होंने जीवन के यथार्थ को उद्घाटित किया और हिंदी साहित्य को एक नई भूमिका प्रदान करने में वे सफल हो गये हैं । सुरेंद्र वर्मा की प्रकशित रचनाएँ निम्न रूप में लक्षित की गयी हैं -

1.4.1 कहानी संग्रह :-

सुरेंद्र वर्मा का कहानी साहित्य उनके नाटक साहित्य की भाँति ही सफल एवं समृद्ध है । उनकी कहानी के वर्ण्य विषय और शिल्प में मौलिकता है जिसके कारण वह गरिमामय हो गयी है । सुरेंद्र वर्मा ने अपने साहित्य संसार में कभी निरूद्देश्य साहित्य का निर्माण नहीं किया अत: उनकी कहानियाँ भी निरूद्देश्य नहीं है । वस्तुत: उनकी कहानियाँ उनके विचार और भावनाओं का परिणाम है । सुरेंद्र वर्मा के लगभग समस्त कहानियों से हमें वर्तमान एवं ऐतिहासिक कालखंड के समाज जीवन का जीवंत चित्रण देखने के लिए मिलता है ।

सुरेंद्र वर्मा की समस्त कहानियाँ हमें तीन कहानी संग्रहों में प्राप्त होती हैं । जैसे --

1. प्यार की बातें
2. कितना सुंदर जोडा
3. नयी कहानियाँ

1.3.2 उपन्यास :-

सुरेंद्र वर्मा का उपन्यास क्षेत्र में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । उनका उपन्यास साहित्य उनके जीव-जगत्, परिस्थितियों, संस्कारों एवं विविध मनोदशाओं के अतिरिक्त तत्कालीन सामाजिक अवस्था से प्रभावित होकर निर्मित हुआ है ।

1. अंधेरे से परे

युवा पीढी के प्रख्यात नाटककार सुरेंद्र वर्मा का यह पहला उपन्यास है - 'अंधेरे से परे' । प्रस्तुत उपन्यास का प्रथम संस्करण सन 1960 में हुआ । वैसे, किसी भी रचना के लिए 'पहला' विषेशण बहुत बार गलत-फहमी पैदा कर सकता है । लेकिन कम-से-कम सुरेंद्र वर्मा के साथ ऐसी कोई गुंजाईश नहीं हैं । यह बात ढोसाख्ता कही जा सकती है कि 'अंधेरे से परे' एक समर्थ रचनाकार का अत्यंत सशक्त उपन्यास हैं, जो उनके सभी अर्थो में 'सचेत कथाकार' होने का एक मजबूत प्रमाण है । आज की मजबूर भागती हाँफती जिंदगियों के आस-पास का बहुआयामी कथानक उसकी तेज-टटकी बेलौप भाषा और उसका शिल्पहीन 'शिल्प' और कुल मिलाकर पूरे उपन्यास की बहुत भीतर तक बजती हुयी गूँज 'अंधेरे से परे' के एक महत्त्वपूर्ण सार्थक उपन्यास होने-कहने के लिए काफी है ।

सुरेंद्र वर्मा का यह प्रस्तुत उपन्यास नायक प्रधान है । अत: इस उपन्यास के नायक का नाम जित्तल है जिसकी जीवन के प्रति देखने की दृष्टि बिल्कुल निराशा जनक है । उसके जीवन में एकांत होने के कारण उदासिनता, परिवार में कलह होने के कारण परिवार के प्रति स्नेह से ज्यादा कटुता या दूरावा आदि के कारण उसे अपना जीवन अंधेरे से भी ऊपर लगने लगा है । अत: इसी प्रसंग एवं घटनाओं के कारण साहित्य विश्व में प्रस्तुत उपन्यास ने अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है ।

2. मुझे चाँद चाहिए :-

उपन्यासकार सुरेंद्र वर्मा का दूसरा एवं बहुचर्चित उपन्यास है - 'मुझे चाँद चाहिए' । इसका प्रथम संस्करण सन 1994 में आया । चाँद चीरकाल से हिंदी साहित्य में विविध भावों - विचारों की अभिव्यथकत का माध्यम रहा है । सुरेंद्र वर्मा ने अपने नए एवं महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में चाँद के इतने बहु-आयामी एवं व्यंजनापूर्ण प्रयोग ऐसी खूबसुरती से किए हैं कि कृति के सभी अंग-उपादान एवं दृष्टिकोण इसकी चाँद की छटा से आलोकित हो उठें हैं । यह प्रयोग अपनी प्रतिकात्मकता में कलात्मक तो है ही बल्कि गहन, वैचारिकता से संवलीत भी है ।

सुरेंद्र वर्मा का यह प्रस्तुत उपन्यास नायिका प्रधान है जिसका नाम है 'वर्षा वशिष्ट' । उसे अभिनय का बहुत बडा शौक है । उसने फिल्म तथा नाटकों में अपने अभिनय के द्वारा ऊँचा स्थान प्राप्त किया है । प्रस्तुत उपन्यास में और एक मुख्य पात्र सहनायक के रूप में है जिसका नाम 'हर्ष' है । यह दोनों एक - दूसरें पर बेहद प्यार करतें हैं । अत: प्रस्तुत उपन्यास में इनके प्रेम का वर्णन प्रच्यूर मात्रा में स्पष्ट रूप में दिखाने का प्रयास किया है । हर्ष ही वर्षा की खुशियाँ और चाँद है । अभिनय और हर्ष इन दोनों के लिए ही वर्षा पूरे उपन्यास में जीती हुई नजर आती है । हर्ष की मृत्यु पर उसका कथन दृष्टव्य है - "मेरे वास्ते, चंद्रमा हमेशा के लिए बुझ गया है ।"[1] अत: स्पष्ट है कि वर्षा हर्ष को अपने चाँद के रूप में देखती है । उसके पश्चात वह जीना नहीं चाहती, क्योंकि उसकी हमेशा एक ही माँग है - 'मुझे चाँद चाहिए' ।

3. दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता :-

सुरेंद्र वर्मा की साहित्य सृष्टि का यह तीसरा उपन्यास है । प्रस्तुत उपन्यास का प्रथम प्रकाशन सन 1998 में हुआ है ।

उपभोक्ता को समाज में जीने की एक ही शर्त है - अपनी किसी योग्यता को बाजार में बेच पाना । छोटे छोटे बाजार में छोटी कीमत, बडे बाजार में ऊँची कीमत । ऊँची कीमत से ही सरप्लस, अधिशेष बनेगा और धन का संचय हो सकेगा । इससे सुख और ऊँची जीवन शैली तो प्राप्त हो जाती है, लेकिन बाजार अपनी पूरी कीमत वसूल करता है - चाहें उसे गन्ने की तरह निचोडना ही क्यों न पडे ।

---

1. *सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ -*

इस उपन्यास में ऐसे ही दो युवकों की कहानी है जो एक हादसे द्वारा एक दूसरे के करीब आयें हैं और एक अच्छे दोस्त बने हैं । जिनके नाम है नील और भोला । नील एक शिक्षित युवक है तो भोला अनपढ है । यहाँ सुरक्षा और समृद्धि का सपना सँजोये नील और भोला अवसर और समृद्धि के महानगर मुंबई पहुँचते हैं । भोला को अंडरवर्ल्ड पनाह देता है तो नील मिसेज दस्तूर के यहाँ उनका शोध-सहायक बनकर रहने लगता है । कुछ दिनों के पश्चात अंडरवर्ल्ड का भोला के ऊपर का विश्वास बढता है और भोला अपनी तरक्की करता जाता है । इसके सहारे दो पैसे भी जोडता है । बार में नाचनेवाली लडकी शालू के साथ उसके प्रेम संबंध जुड जाते हैं और बाद में वे दोनों अपना एक घर बसाते हैं । उधर सजीला, शालीन, जहीन नील असंतुष्ट, अधेड, धनाड्य महिलाओं के लिए पुरूष-वेश्या बन जाता है । उसका सितारा ऊँचा चढता जाता है । प्लैट, टेलीफोन, कार, विदेशी प्रसाधन और काम सिर्फ आत्म को दबाकर शरीर बेचना । कुमुद से शुरू हुई यात्रा ब्लॉसम, यास्कीन, कुंतल, स्टेला, रंभा, कृष्णा, सौदामिनी, शिल्पा, पारूल, करूणा, ऊर्वशी, वैशाली, नैन तक जाती है । सोमपुरिया सेठ की बेटी पारूल शादी-शुदा होकर भी नील से बेहद प्यार करती है और उसीसे गर्भधारणा प्राप्त करती है । लेकिन नील नैन नामक एक लडकी के प्रेम में पागल बन गया है । नैन से विवाह कर के नील अपना घर बसाना चाहता था लेकिन पारूल अपनी प्रेम भंगता के कारण पागल होकर नील का सब कुछ छिन लेती है और उसे फिर से रास्ते पर लाती है । इधर पारूल का घराना माफियों के जरिए नील की हत्या करवाता है । इसका पता भोला को लगता है लेकिन वह भी यह बात सुनकर हतप्रभ और सुन्न हो जाता है ।

साँस रोककर पढी जानेवाली इस कथा में सफेदपोश अपराधी और माफिया दोनों हैं । प्रस्तुत उपन्यास में दो जिंदादिल युवक कुछ बनने की खातिर मुंबई तो जाते हैं लेकिन कुछ बनने की बजाय पूर्ण रूप से लूट लिए जाते हैं । एक को सचमूच से ही मुर्दा बनाया जाता है तो दूसरे की अवस्था भी मुर्दे जैसी बन जाती है । अत: वह दोनों पूर्ण रूप से मुर्दा बनकर रह जाते हैं । इन्ही दोनों का आधार बनाकर 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' नामक उपन्यास में सुरेंद्र वर्मा एक नयी कथा के साथ उपस्थित हो गये हैं ।

1.4.3 एकांकी साहित्य :-

डॉ. वीरेंद्रकुमार मिश्र ने एकांकी के संबंध में अपने विचार स्पष्ट करते हुये कहा है - एकांकी नाटक में अन्य प्रकार की नाटकों सी विशेषता होती है । उसमें एक ही घटना होती है और वह घटना नाटकीय

कौशल से ही कौतुहल का संचय करती हुई चरमसीमा तक पहुँचती है । पात्रों की संख्या मर्यादित याने चार से पाँच तक होती है । पात्रों का संबंध प्रत्यक्ष नाटक की घटना से होता है । कथावस्तु भी स्पष्ट और कौतुहल से युक्त रहती है । उसमें वर्णनात्म्क की अपेक्षा अभिनयात्मकता की प्रधानता प्रच्युर मात्रा में रहती है । इस प्रकार की रचना करना साधारण नाटक की रचना से कठिन है ।''[1]

उपर्युक्त बातों के द्वारा कही बार यह तय करना मुश्किल होता है कि सुरेंद्र वर्मा को किस विधा का सिद्धहस्त कलाकार माना जाए । लेकिन एक बात निश्चित है उनका ज्यादह से ज्यादा रूझान नाटक की ओर अधिक है, क्योंकि लंबे समय से वे रंगमंच के साथ जूडे रहे हैं । एक नाटककार के रूप में इनकी जो पहचान बनी है वह इनके एकांकी नाटक से ज्यादह हैं । वे एक सजग रचनाकार हैं । खुली आँखोंसे आज के सामाजिक और पारिवारीक स्थितियों को देखते हैं । उनका बडी कुशलता से चित्रण करतें हैं । उनके एकांकियों का संचार उनके नाटकों की संचार की तरह ही सामाजिक परिवेश और ऐतिहासिक तथा पौराणिक गाथाओं पर आधारित है । ''नींद क्यों रातभर नहीं आती'' एकांकी संग्रह के द्वारा एकांकीकार के रूप में सुरेंद्र वर्मा की मात्रा रंगशिल्प की मात्रा से जुडी हुई है । प्रस्तुत एकांकी संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन 1976 में हुआ है । इसके अंतर्गत निम्नांकित एकांकी सम्मिलित है । जैसे, ---

1. शनिवार के दो बजे
2. वे नाक से बोलते हैं
3. हरी घास पर घंटे भर
4. मरणोपरान्त
5. नींद क्यों रात-भर नहीं आती
6. हिंडोल इंगुर

1.4.4 व्यंग्य साहित्य :-

साहित्य में व्यंग्य रचनाओं का महत्व स्वत:सिद्ध है । व्यंग्यकार गर्हणा तो करता है, पर बडे कौशल से । वह कटाक्षों का प्रयोग करता है, पार्श्व से आघात करता है और सब के द्वारा आपत्तिजनक

---

1. डॉ. वीरेंद्रकुमार मिश्र - एकांकी उद्भव और विकास, पृष्ठ -12

विचारधारा गर्हणीय व्यक्ति को परास्त करने का प्रयत्न करता है । व्यंग्य रचनाएँ उद्देश्य और शैली दोनों ही दृष्टियों से उच्चतर साहित्य के अनुकुल है आज समाज व्यवस्था और शासनतंत्र शुरू से लेकर आखिर तक भ्रष्ट, कलुषित और अमानुषिक है अत: क्रांतिकारी साहित्य और व्यंग्य साहित्य की अधिक आवश्यकता है ।

व्यंग्य लेखक का अपना एक विशिष्ट क्षेत्र होता है । वह साहित्य की परिधि में आता है । यह व्यंग्य अपनी साहित्यिक रचनाओं - कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है । वह उथला, गहरा, शालीन, अश्लील, श्लील या बौद्धिक दृष्टि विकसित व्यंग्य लेखक हास्य का तिरस्कार करेगा । उसके लेखन में गंभीरता अधिक होगी । सुरेंद्र वर्मा इसी प्रकार के लेखक हैं । अत: प्रत्येक रचना से गंभीरता का व्यंग्य झलकता है । अत: उनका एक व्यंग्य साहित्य ~~भी प्रकाशित है जो~~ "जहाँ बारिश न हो" ~~इस~~ शिर्षक के द्वारा प्रकशित हुआ है ।

1.4.5 काव्य :-

कवि और उसके काव्य का विवेचन और मूल्यांकन कई स्तरोंपर किया जा सकता है । हिंदी के आधुनिक युग के कुछ वरिष्ठ कवियों के संबंध में हिंदी समीक्षकों ने जो विवेचन किया है । उनके फलस्वरूप उन कवियों की एक विशिष्ट मानरेखा हिंदी साहित्य में बन चूकी हैं । कवि सुरेंद्र वर्मा के काव्य के संबंध में भी युगीन समीक्षकों की प्रतिक्रियाएँ बहुत कुछ परिणत स्थिति में पहुँच चूकी हैं । सुरेंद्र वर्मा का कवि व्यक्तित्व बहुमुखी सृष्टियों का आधार है । जो उनके एकमात्र काव्य संग्रह 'नया प्रतिक' से प्रस्फूटित होता है ।

1.4.6 अन्य साहित्य :-

सुरेंद्र वर्मा एक बहुमुखी एवं प्रतिभासंपन्न साहित्यकार होने के कारण उन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास, एकांकी, काव्य, व्यंग्य आदि साहित्य लेखन के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक विधाओंपर भी अपनी लेखनी अत्यंत सजगता के साथ चलायी है । जिसके अंतर्गत - 'बिल्ली चली पहन कर जूते' (रूपांतर) द्वारा उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की एक झलक स्पष्ट होती है । 'सुभाष दशोत्तर का मृत्युबोध' और 'देवराज के काव्य में मानवतावादी दृष्टि' आदि समीक्षात्मक लेखों में उनका समीक्षक रूप उभर उठा

है । उन्होंने कई फुटकल कहानियाँ लिखी हैं जो समय-समयपर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित होती जा रही हैं । 'नटरंग', 'कल्पना', 'प्रकर' आदि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक प्रकार का लिखित साहित्य प्रकाशित हो चूका है ।

1.4.7 नाटक साहित्य :-

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में और खासकर साठोत्तरी हिंदी नाटककारों में सुरेंद्र वर्मा ने अपना विशिष्ट स्थान निर्माण किया है । हिंदी नाट्य साहित्य में प्रयोगशील नाटककार के रूप में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान हैं । उन्होंने अपने नाटकों द्वारा गुप्तकालीन, सामंतकालीन, उत्तर मुगल कालीन, आधुनिक कालीन आदि सभी सामाजिक स्थितियों का आलेख प्रस्तुत किया है । जहाँ इतिहास मौन होता है वहाँ कल्पना के माध्यम से नाटककार ने मूक इतिहास को वाणी देने का प्रयत्न किया है । ऐतिहासिक घटनाओं को आधुनिकता के साथ जोडकर सुरेंद्र वर्मा ने अपनी सृजनशीलता उनके नाटकों के माध्यम से बलवती बनी हुयी लक्षित होती है ।

सुरेंद्र वर्मा का नाट्य-साहित्य संसार इस प्रकार से है, --

1. सेतुबंध (प्रथम प्रकाशन सन 1972)
2. आठवाँ सर्ग (प्रथम प्रकाशन सन 1976)
3. द्रौपदी (प्रथम प्रकाशन सन 1972)
4. नायक खलनायक विदूषक (प्रथम प्रकाशन सन 1972)
5. एक दूनी एक
6. छोटे सैयद बडे सैयद
7. शकुंतला की अंगूठी (प्रथम प्रकाशन सन 1990)
8. कैद - एहयात
9. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक (प्रथम प्रकाशन सन 1975)

उपर्युक्त नाटकों को पढने के पश्चात ऐसा लगता है कि नाटककार सुरेंद्र वर्मा पर मोहन राकेश का प्रभाव पडा है । परंतु स्वयं लेखक सुरेंद्र वर्मा कहते हैं - "प्रभाव की बात मैं नही जानता, हो भी सकता है .... शायद है भी ।"[1] फिर भी वे राकेशजी से जरूर प्रभावित हुये लगते हैं । ताकि उनके प्रति मन में श्रद्धा तथा आत्मीयता देखने को मिलती हैं । वे राकेशजी को बडा इन्सान मानते हैं ।

सुरेंद्र वर्मा की रचनात्मक प्रतिभा स्पृहणीय लगती है, फिर भी उनके नाटकों को पढ़ने से लगता है कि उनके नाटकों में एकदम नयापन अथवा क्रांतिकारीता नहीं है । उनमें राकेश के नाट्यप्रयोगों का ही नया संधान किया गया है । अर्थात यहाँ राकेश द्वारा निर्धारित दिशाओं में सुरेंद्र वर्मा अगला कदम निर्धारित करते हैं । वे राकेश द्वारा छिड़ी गयी लिंकपर ही चलना पसंद नहीं करते हैं । अत: उनके द्वारा चुने गए विषय हिंदी नाट्य के लिए एकदम अछूते और नए लगतें हैं । इस तरह उनके संपूर्ण नाटक निजी रचनात्मकता की विशेषता रखते हैं ।

इससे स्पष्ट है कि जहाँ राकेश मौन और कमजोर महसूस होते हैं वहाँ सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों को, नाटक के कथ्य को समर्थ एवं प्रभावित बनाया है । वास्तव में सुरेंद्र वर्मा ने राकेश की परंपराओं को ही आगे बढाने का कार्य किया है । मानवीय स्थितियों के सुक्ष्मतर मन:स्थितियों के परतों को खोलने का काम किया है ।

सुरेंद्र वर्मा फिल्म को नाटक की अपेक्षा अधिक प्रभावी एवं शक्तिशाली माध्यम मानते हैं । उनके मतानुसार आज नाटक की अपेक्षा फिल्म अधिक प्रभावी माध्यम है । फिल्म जिस प्रकार आसानी से हर व्यक्ति देख सकता है, इसी प्रकार नाटक देखने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं । आज नाटक में भी रंगमंचीयता की दृष्टिसे अनेक से नये नये प्रयोग होते आ रहे हैं । सुरेंद्र वर्मा के मतानुसार रेडियो मनोरंजन और सूचनाप्रसार एवं प्रचार का बडा प्रभावी माध्यम है परंतु कला और साहित्य के लिए तथा उनके गंभीर रूपों के लिए वह उपयोगी महसूस नहीं होता ।

वास्तव में सुरेंद्र वर्मा के सभी नाटक उनकी प्रयोगधर्मिता के कारण ही बडे दिलचस्प और बहुचर्चित रहे हैं । और इसी कारण सुरेंद्र वर्मा और उनके नाटक हमारे शोधकार्य का विषय बन गए हैं । उनके नाटकों में प्रस्तुत रंगमंच, अभिनय एवं कामचेतना किस प्रकार उभर कर हमारे सामने आयी हैं, यह स्पष्ट करने का प्रयास प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत किया गया है ।

: निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि श्री. सुरेंद्र वर्मा वर्तमानकाल के एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार सिद्ध होते हैं । उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपना योगदान किया है । इनके विचार क्रांतिकारी होने हे कारण इनके साहित्य में हमें क्रांतिकारी स्वर दिखायी देता है ।

वर्माजी के साहित्य से स्पष्ट होता है कि वे बंधन को नहीं मानतें । उन्होंने बचपन से लेकर आगे जीवन में अनेक प्रकार की संघर्ष का सामना किया हैं । सभी विधाओं में उनका कार्य सराहनीय रहा हैं । हिंदी साहित्य में उनका स्थान एक नाटककार के लिए ही ज्यादह महत्त्वपूर्ण है । उनके साहित्य में हमें जीवन की अनेक समस्याओंका और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण दिखायी देता है । वर्माजी ने कहानी, नाटक, उपन्यास के साथ-साथ एकांकी, व्यंग्य, काव्य, समीक्षात्मक लेख आदि साहित्यिक रचनाओं में अपना योगदान किया हैं । उनका साहित्य सहजता से पाठकों को प्रभावित करनेवाला है । अत: वे बहुमुखी साहित्यकार हैं यह यथार्थ रूप में स्पष्ट होता है ।